International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 20-09-2019; Accepted: 21-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 53-55

अतीत के आईने में वर्तमान की झलकरू श्रीकांत वर्मा

डॉण् भावना मल्होत्रा

डब्ल्यूण्ईण्एण्, गुरुद्वारा रोडए करोल बागए, नई दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

अतीत मानव जीवन से जुड़ा ऐसा पक्ष है जिसे किसी भी स्थिति में झुठलाया नहीं जा सकता। मनुष्य का वर्तमान अतीत से अभिन्न रूप में सन्नद्ध रहता है। अतीत को जड़ या मृत मानकर, 'बीत गया' मानकर उसे अनदेखा करना या कमतर आँकना अनुचित है क्योंकि यह वह नींव है जिस पर भविष्य में एक मजबूत इमारत बनाने के लिए वर्तमान में ध्यान देना आवश्यक होता है। बीते समय में हुई ग़लतियों से सीख लेकर उसमें सुधार करने तथा चेतन होने का मार्ग अतीत ही दिखाता है। इस 'अतीत' को श्रीकांत वर्मा विगत घटना मात्र न मानकर एक ऐसी सतत, प्रवाहमान चेतना मानते हैं जिसके होने पर न केवल अतीत के आईने में वर्तमान को देखा जा सकता है अपितु वर्तमान के आईने में 'भविष्य' का चेहरा भी दृष्टिगोचर होता है।

श्रीकांत वर्मा एक ऐसे कवि थे जो अपने वर्तमान के प्रति सदैव सजग रहे। आस-पास के वातावरण और परिस्थितियों से जो अनुभव उन्हें हुए उनकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी कविताओं में की। राजनीति में सक्रिय रहते हुए सत्ता में व्याप्त जिन विद्रूपताओं से कवि श्रीकांत वर्मा का साक्षात्कार हुआ तथा जो कटु अनुभव हुए उसकी अभिव्यक्ति हेतु उन्होंने अतीत को हथियार बनाया। अपने अन्तिम काव्य-संग्रह 'मगध' में मुख्यतः उन्होंने अतीत के माध्यम से अवमूल्यित होते वर्तमान का चित्र खींचा और आज की स्थितियों पर व्यंजनात्मक प्रहार किया। सत्ता के जिन ग़लियारों में वह थे और जिस शोषक चरित्र से परिचित हो चुके थे, परिस्थितिवश उसकी अभिव्यक्ति यथारूप करना कठिन था। अतः वह अतीत की दुनिया से उन पात्रों, स्थानों को लेकर आए जिनकी संगति वर्तमान के साथ सटीक बैठती है।

यह 'अतीत' श्रीकांत वर्मा की कविताओं का एक ऐसा महत्त्वपूर्ण पहलू है जिसके माध्यम से आधुनिक भाव-बोध को अपनी कविताओं में उन्होंने प्रखरता के साथ अभिव्यक्ति दी है। अतीत के ऐतिहासिक चोले में बीसवीं शताब्दी को उन्होंने ला खड़ा किया है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह अपने वर्तमान से सीधे सक्षात्कार नहीं करना चाहते थे। अपितु, अतीत में घटित ऐतिहासिक घटनाओं को याद करते हुए आधुनिक मनुष्य के समक्ष एक बिंब के रूप में वह उन परिस्थितियों को ला खड़ा करते हैं जो आज भी चारों ओर व्याप्त हैं। 'आज' के भारत में व्यापी विसंगतियों को, मनुष्य जीवन की त्रासदियों को कालातीत विसंगत स्थितियों के माध्यम से ही उन्होंने चित्रित किया है।

वर्तमान जीवन का द्वंद्व और विसंगतियाँ उन्हें अतीत की ओर ले जाती हैं। ऐतिहासिक चरित्रों, घटनाओं, नगरों के प्रतीकात्मक प्रयोग द्वारा शोषणकारी सत्ता में साधारण जन की पीड़ा और संत्रास को वह रूपाकार देते हैं। उनकी अनुभूतिजन्य संवेदना समय की विद्रूपताओं से पाठकों का सीधा साक्षात्कार करवाती है जिसमें इतिहास से जुड़ी घटनाएँ व पात्र अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शासकों की विलासिता, सत्ता की विमूढ़ता, जड़ता, निष्क्रियता, वर्तमान की समस्याओं व जनता की जटिल स्थितियों को अतीत से सन्दर्भ लेकर वह प्रस्तुत करते हैं। अपने अभिप्रेत की पुष्टि और प्रेषण हेतु कलिंग, मगध, कोसाम्बी, कपिलवस्तु, कोसल, अवन्ती, हस्तिनापुर, मिथिला, वैशाली, पाटलिपुत्र, अशोक, बिम्बिसार, चन्द्रगुप्त, कालिदास, रोहिताश्व, वसंत सेना आदि का उल्लेख अपनी कविताओं में उन्होंने किया है। इनके माध्यम से अतीत का स्मरण करते हुए वर्तमान से मुठभेड़ की है। इस प्रकार उनकी कविताएँ अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच के अंतर्संबंध को सामने लाती हैं। अतीत की पतनकारी स्थितियों को सामने लाकर वर्तमान की विद्रूपताओं के प्रति जागृत कर उनमें सुधार लाने को सचेत करती हैं व सुन्दर भविष्य का मार्ग दिखाती हैं।

अपनी कविताओं में श्रीकांत वर्मा ने अतीत के इन महत्त्वपूर्ण स्थानों और व्यक्तियों का अत्यंत सांकेतिक प्रयोग समकालीन राजनीतिक-सामाजिक विडम्बना को उजागर करने के लिए किया है। 'मगध' में अतीत से जुड़े इतने प्रसंगों, इतिहास प्रसिद्ध स्थलों की उपस्थिति देख 'अतीत' को लेकर जब उनसे प्रश्न किए गए तो उन्होंने 'केदारनाथ सिंह' और 'विश्वनाथ प्रसाद तिवारी' को बतलाया कि वे अतीत की ओर इसलिए गए हैं कि 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की तरह उसे समकालीन बनाना चाहते हैं।' फिर उन्होंने आगे कहा कि 'वर्तमान से ऊब भी उसका एक कारण हो सकता है लेकिन असली कारण यह है कि अभी तक अतीत की बहुत पहचान नहीं हुई है।' उसके बाद वे यह भी कहते हैं कि 'अतीत के प्रश्न अतीत के ही नहीं वर्तमान के भी प्रश्न हैं।'"[1]

श्रीकांत वर्मा का यह कथन 'अतीत' को कविताओं में लाने की उनकी मंशा को स्पष्ट करता है | उन्होंने अतीत के ध्वंसावशेषों को बीसवीं शताब्दी में उपस्थित किया है। अतीत के वैभव को वर्तमान में ढूँढने की नई और नायाब दृष्टि उनकी कविताओं में मिलती है। मगध, काशी, कोसल, नालंदा, हस्तिनापुर, कपिलवस्तु, कोसाम्बी, अवन्ती, उज्जैनी आदि ऐतिहासिक स्थल वर्तमान परिदृश्य में पूर्णता के साथ आ खड़े होते हैं। इन ऐतिहासिक नामों का सांकेतिक इस्तेमाल करते हुए इतिहास को कसौटी बनाकर वर्तमान को वह परखते हैं। अतीत का स्मरण कर वह केवल उसकी गौरव गाथा नहीं गाते अपितु वर्तमान की विसंगतियों, विद्रूपताओं से उनकी मुठभेड़ होती है। बीते वर्षों और वर्तमान की स्थितियों का अपनी कविताओं के माध्यम से परीक्षण कर वह लिखते हैं कि :-

"कुछ भी नहीं होते कुछ हज़ार वर्ष
कुछ हज़ार वर्षों में
कुछ भी नहीं बना
और कुछ भी नहीं बिगड़ा है
बहुत कुछ बना
और बहुत कुछ बिगड़ा है।"[2]

'मगध' की कविताओं में वर्तमान की समूची व्यवस्था कठघरे में खड़ी दिखाई देती है । अतीत की गलियों में भटकती यह कविताएँ अपने जीवित वर्तमान का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं । इस वर्तमान का स्वरूप सामने लाते हुए वह कहते हैं कि 'वर्तमान को झेल सकना, दिन–ब–दिन, कठिन होता जा रहा है ' इस कठिनाई का कारण वह असंगतियाँ हैं जो वर्तमान में चहुँ ओर व्याप्त हैं । श्रीकांत वर्मा की कविताएँ आज की राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था में गहरे पैठ चुकी उस अव्यवस्था व आचारहीनता को लक्ष्य करती हैं जिसके कारण सामान्य नागरिक का जीवन प्रतिदिन और कठिन हो रहा है । स्वर्णिम, वैभवपूर्ण अतीत वाले भारत देश में जन सामान्य की अनदेखी, उनकी कुंठा, संत्रास व बेचैनी के साथ ही वह सत्ताधारी लोगों के दोहरे चरित्र को भी उद्घाटित करते हैं । 'मगध' की कविताओं में अतीत के माध्यम से वर्तमान राजनीति के उस रूप को वह सामने लाते हैं जिसमें 'जनतंत्र' नाम मात्र का रह गया है । जहाँ जनता अपना 'मत' भी सोच-विचार कर आज़ादी से नहीं दे सकती । जहाँ विवशता में मतदान वह अवश्य करती है किन्तु 'चुनाव' उसका अपना नहीं होता । जहाँ जनतंत्र मात्र 'वोटतंत्र' बनकर रह गया है । जहाँ जनता की यह अभिव्यक्ति है कि :-

"फ़ैसला हमने नहीं लिया
सिर हिलाने का मतलब फ़ैसला लेना नहीं होता
हमने तो सोच-विचार तक नहीं किया ।"[3]

यह वह देश है जहाँ 'जनता का तंत्र' है और जनता ही असहाय और निराश दिखती है । यह ऐसा तंत्र है, जहाँ 'जनता' की सुनने वाला कोई नहीं है । 'जनता' उपेक्षित है । उन्हें चिंता सताती है कि ऐसी स्थिति में वह उम्मीद करें तो किससे ? गुहार कहाँ लगाएँ ? समस्याओं का हल किससे माँगें ? क्योंकि जवाब देने वाले की आँखों पर स्वार्थ की पट्टी बंधी है । जनता उनके लिए शून्य है । जनता के शून्य होने का सीधा तात्पर्य है कि वह उपेक्षित है । उनके शून्य यानी नगण्य होने का कारण आज की वह राजनीति ही है जो अपने कर्तव्यों से विमुख है ।

यह ऐसा राजनीतिक प्रतिनिधित्व है जिन्हें सब ठीक नज़र आता है । यह वह समय है जब एक लम्बे इंतजार के बाद भी कुछ बदला नहीं है । जनतंत्र से जुड़ी आशाओं का ख़ात्मा हो गया है । शासक वर्ग वही करता है जो वह चाहता है । सबकी नियति निर्धारित है । प्रश्न करने का किसी को कोई हक़ नहीं । सभाएँ बुलाया जाना खानापूर्ति करने जैसा है :-

"हमारा क्या दोष?
न हम सभा बुलाते हैं
न फ़ैसला सुनाते हैं
वर्ष में एक बार
काशी आते हैं-
सिर्फ यह कहने के लिए
कि सभा बुलाने की भी आवश्यकता नहीं
हर व्यक्ति का फैसला
जन्म से पहले हो चुका है ।"[4]

जनता के तंत्र वाले देश में जब श्रीकांत वर्मा व्यवस्था को 'जन' के ही प्रति उदासीन देखते हैं, सही बात को अनसुना करने की प्रवृत्ति को पनपता पाते हैं तो करारा व्यंग्य करते हैं । सत्ताधारी किसी तथ्य पर किसी का परामर्श नहीं सुनना चाहते । सुनकर अनसुना करते हैं । यह उनकी निरंकुशता की ओर एक संकेत है । जन की भावनाओं और अपने विचारों को एक साथ पिरोकर सत्य को सामने वह लाते हैं । जनता द्वारा चुने गए जनता के ही प्रतिनिधि किस प्रकार जनता की समस्याओं को पूर्णतः अनसुना कर अपना उल्लू सीधा करते हैं, उसे शब्द देते हुए वह कहते हैं :-

"मैं फिर कहता हूँ
धर्म नहीं रहेगा, तो कुछ नहीं रहेगा-
मगर मेरी
कोई नहीं सुनता
हस्तिनापुर में सुनने का रिवाज़ नहीं-
जो सुनते हैं
बहरे हैं या
अनसुनी करने के लिए
नियुक्त किये गए हैं ।"[5]

यानी सत्ता या कुर्सी तक जो पहुँच गया है उसका मूल उद्देश्य जनता की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन करना न होकर व्यक्तिगत हित साधन हो गया है । यह विडम्बना ही है कि जिस व्यक्ति को अपना विश्वास देकर अपना प्रतिनिधि बनाकर जन साधारण सत्ता में भेजता है वही उस जन साधारण को भुला देता है । उनकी समस्याओं को अनसुना करता है । 'हस्तिनापुर का रिवाज़' यहाँ पुनः आकार लेता दिखाई देता है । यह वही ऐतिहासिक हस्तिनापुर है जहाँ सत्ता पर काबिज़ शासक स्वार्थलीन होकर हर निर्णय अपने हितार्थ लेता रहा है । प्रजा की समस्याओं, कष्टों को अनदेखा व अनसुना करता रहा है । अतीत के पन्नों पर अंकित उसी हस्तिनापुर को श्रीकांत वर्मा ने वर्तमान में दिखाया है । हस्तिनापुर की ही भाँति 'कोसल' की विचारहीनता पर व्यंग्य बाण चलाते हुए सत्ता में स्थापित लोगों की विचारविहीनता को वह लक्षित करते हैं । वह जानते हैं कि सत्ता में स्थापित लोग कुर्सी के अतिरिक्त किसी प्रश्न, किसी समस्या पर विचार नहीं कर सकते

"महाराज बधाई हो ! महाराज की जय हो ।
युद्ध नहीं हुआ-
लौट गए शत्रु...
वे सिर्फ कुछ प्रश्न छोड़ गए हैं,
जैसे कि यह-
कोसल अधिक दिन टिक नहीं सकता,
कोसल में विचारों की कमी है ।"[6]

यह विचारविहीनता एक सही शासन व्यवस्था का अभाव प्रस्तुत करती है । जिस विचारहीनता की बात यहाँ है उसका सीधा सम्बन्ध वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य से है । यह विचारविहीन कोसल आज का सत्य है । कुर्सी पर बैठे सत्ताधारी वर्ग के लोगों के दोगलेपन को श्रीकांत वर्मा ने यहाँ उजागर किया है । सत्ता में रहकर उसके भीतरी चरित्र को भली-भाँति, क़रीब से देखकर उसके कटु सत्य से वह परिचित हो गए थे । वह जानते थे कि सत्ताधारी कहता कुछ और है व करता कुछ और है । वह नीति की बात निरंतर करता है और ग़लत कार्यों में लिप्त रहता है । सदाचार बनाए रखने के लिए जन सामान्य के बीच आडम्बर करता है और उसका ख़ुद का आचरण शर्मनाक है । असत्य को वह ओढ़ता-बिछाता है किन्तु सत्य का दुशाला ओढ़े रहता है । वह व्यसनों से ग्रसित है, व स्वार्थान्ध है । शासक बनने का कोई गुण उसमें नहीं है :-

"मगध में शोर है कि मगध में शासक नहीं रहे
जो थे
वे मदिरा, प्रमाद और आलस्य के कारण

इस लायक
नहीं रहे
कि उन्हें हम
मगध का शासक कह सकें।"[7]

सोलह महाजनपदों में सर्वाधिक प्रसिद्ध 'मगध' उनकी कविताओं में उस जगह का प्रतीक बनकर आता है जो अपने वैभव, शक्ति, समृद्धि के साथ ही निरंकुशता के लिए भी जाना जाता रहा है। जहाँ आतंक, खौफ़ का बोलबाला है। जहाँ व्यक्ति 'स्वाधीन' है किन्तु नाममात्र को क्योंकि युद्ध, हत्या, शासन, आतंक का प्रसार इस प्रकार किया गया है कि चाह कर भी कोई 'हस्तक्षेप' करने की हिमाकत न कर सके। यह वह देश है जहाँ शांति बनाए रखना शासक का सर्वोपरि धर्म है और इस तथाकथित शांति को बनाए रखने, अपने शासन कौशल का लोहा मनवाने के लिए ऐसी व्यवस्था वह करता है कि परिस्थितियाँ भयावह हो जाती हैं और 'मगध कहने को मगध रहता है रहने को नहीं।' 'हस्तक्षेप' करने को आतुर कोई जागरुक व्यक्ति भी जहाँ विवश महसूस करता है। स्वाधीन देश में शांति बनाये रखने में पराधीनता की बेड़ियाँ इस कदर बाँधी जाती हैं कि :-

"कोई छींकता तक नहीं
इस डर से
कि मगध की शांति
भंग न हो जाय,
मगध को बनाये रखना है, तो,
मगध में शांति
रहनी ही चाहिए।"[8]

समकालीन परिदृश्य में मगध को बनाए रखने से सीधा तात्पर्य 'कुर्सी' बनाए रखने से है। 'जनता' उस कुर्सी तक पहुँचने की वह सीढ़ी मात्र है जिस पर पैर रखकर वहाँ तक पहुँचा जा सकता है। इसीलिए चुनाव के समय मतदाताओं का मत हासिल करने के लिए राजनेता हर संभव प्रयास करते हैं। जनसामान्य की समस्याओं को समझने, उनके आत्मीय होने का ढोंग करते हैं। प्रत्येक को पहचानते हैं, उन्हें उनके 'होने' का अहसास भी दिलाते हैं। ग़रीबी की मार झेलता यह सामान्य व्यक्ति उनकी चिंता की धुरी होता है। उन्हें उनकी समस्याओं के भँवर से बाहर निकाल देना उनका एकमात्र लक्ष्य होता है किन्तु, मतदान के तुरन्त बाद स्वार्थ की ऐसी आँधी आती है कि वह सब कुछ भूल जाते हैं | रोटी की समस्या को सुलझाने में जुटा ग़रीब, सामान्य व्यक्ति उसके किसी काम का नहीं रह जाता।

विचारणीय है कि जिस जनतांत्रिक देश में 'तंत्र का आधार' मानी जाने वाली जनता इतनी विवश हो कि विवेकहीन होकर बस वही करे जो उसे कहा जाए या जो अन्य साथी कर रहे हों, जहाँ उसकी पुकार सुनने वाला कोई न हो जहाँ उसके जीवन का कोई मूल्य न हो, जहाँ 'उज्जयिनी रास्तों से मुँह फेर चुकी हो'[9] वहाँ रहते हुए व्यर्थता बोध न हो यह संभव नहीं। फिर श्रीकांत वर्मा जो सत्ता में रहते हुए उसके सत्य से अभिमुख हो चुके थे उनके लिए वर्तमान को स्वीकार पाना सरल कैसे हो सकता था। यही कारण है कि अतीत में हुई घटनाओं, स्थितियों, व्यक्तियों को कवि श्रीकांत वर्मा ने आधार बनाया और वर्तमान को उसका आईना दिखाकर सचेत करने का प्रयास अपनी कविताओं के माध्यम से किया ताकि पुनः महाभारत न हो और अतीत के उजाले में वर्तमान में व्याप्त अन्धकार को देखकर और स्वयं में सुधार कर उज्ज्वल भविष्य बनाया जा सके।

संदर्भ सूची

1. समकालीन काव्य यात्रा, नंदकिशोर नवल, पृष्ठ संख्या - 194-195
2. श्रीकांत वर्मा संचयिता, सं. उदयन वाजपेयी, पृष्ठ संख्या - 93
3. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 17
4. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 17
5. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 20
6. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 44
7. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 92
8. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या - 87
9. मगध, श्रीकांत वर्मा, पृष्ठ संख्या – 27